नशेबाजी से हानि ही हानि

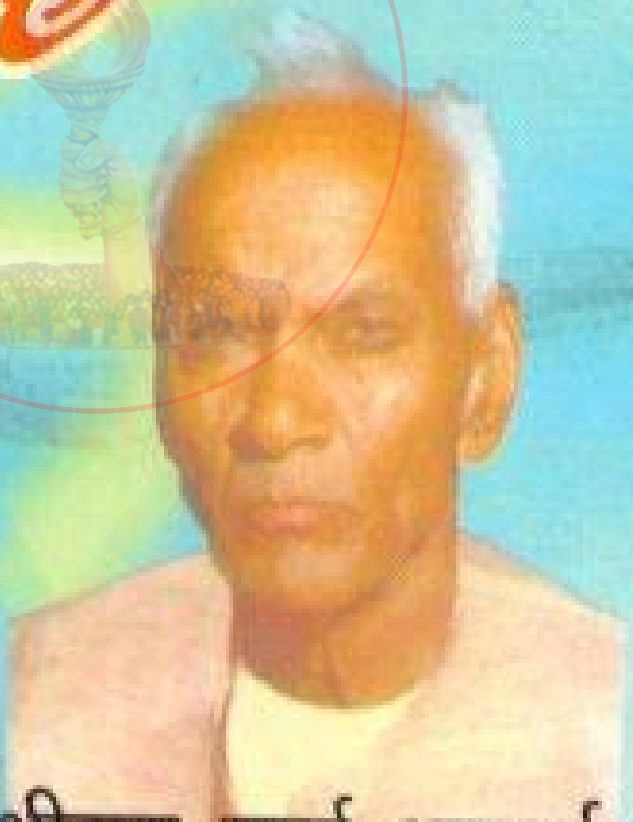

— श्रीराम शर्मा आचार्य

— श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

प्रगतिशीलता किसी के शौर्य पराक्रम का चिह्न मानी जाती रही है । सामान्य मनुष्य में जो गुण पराक्रम होने चाहिए उससे एक कदम आगे बढ़कर जो अपनी विशेषता प्रदर्शित कर सके उसे पराक्रमशाली प्रगतिशील कहा जाता है, किंतु वे पुरातन परिभाषाएं उल्टी हो गई हैं । जो वर्जनाओं की अवज्ञा करे, उनका उल्लंघन करे, उन्हें प्रगतिशील कहा जाने लगा । सही परिभाषा के अनुसार गुण, कर्म, स्वभाव में जो अनुकरणीय विशेषता प्रदर्शित करे, अपने बल पराक्रम का, शौर्य, साहस का प्रदर्शन जिन कामों में हो उन्हें विशिष्ट माना जाता है और प्रशंसनीय भी ।

इन दिनों बात उल्टी हो गई है । जो अनुशासन तोड़े–नीति, नियमों का उल्लंघन करे, वह अपने को प्रगतिशील एवं विशिष्ट

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहता है । ऐसे ही दुष्कृत्यों में लड़कियों से छेड़छाड़, गुरुजनों के साथ उद्दंड व्यवहार और नग्न स्तर के वस्त्र पहनने जैसी उद्धत क्रियाएं करने वाले मूंछें ऐंठते और अपनी शौहरत का प्रदर्शन करते पाए जाते हैं ।

इसी संदर्भ में एक नशेबाजी का भी प्रचलन हो गया है । नशा पीकर अपने को उद्धत स्थिति में ले पहुंचना असभ्यता का एक अंग है और उसे करते हुए किसी को भी लज्जा आनी चाहिए । सज्जनों के सम्मुख इस स्थिति में पहुंचते हुए किसी को भी अपने लिए बुरी बात अनुभव करनी चाहिए पर इन दिनों इस उल्टे प्रचलन में नशेबाजी को भी बड़प्पन में गिने जाने का प्रचलन चल पड़ा है । नशा निषिद्ध वस्तुओं में है । उसे पीकर व्यक्ति

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक हानि करता है । होश हवाश खो बैठने की स्थिति अपना लेना असभ्यता का चिह्न है । पर लोग उसे अपनाने में शान समझते हैं ।

कुछ समय पहले अनेक प्रकार के चित्र विचित्र नशों का रिवाज था । भांग, अफीम, गांजा, सुलफा, मदक आदि कई प्रकार के बनते और कई प्रकार से प्रयोग होते थे । उनके स्वाद और नशे भी कई प्रकार के होते थे । अब वे दो में केन्द्रित हो गए हैं—एक सिगरेट दूसरे शराब । आरंभ करते समय इनके लिए पैसा खर्च करने वाला किसी लाभ की आशा नहीं करता । उसके दिमाग में एक ही बात रहती है कि तथाकथित बड़े आदमी इनका सेवन करते हैं । इसलिए उनकी नकल

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते हुए खुद भी बड़ा आदमी बना जाए । स्वाद के लिए भी इन्हें नहीं पिया जाता है क्योंकि आम तौर से वे कड़ुवे और दुर्गंध युक्त होते हैं । गुणों की खोज करने पर जैसे–तैसे बात कही जाती है कि उनके सेवन से फुर्ती आती है । थका हुआ शरीर जब अधिक काम करने से इंकार करता है तब इनके द्वारा उसी स्तर का प्रभाव उत्पन्न किया जाता है जैसे थके हुए घोड़े को हंटर का प्रभाव होता है । हंटर में कोई निजी शक्ति नहीं है । वह थके हुए शरीर को उत्तेजित और मजबूर करता है कि वह विश्राम की आशा न रखे प्रताड़ना का आघात पाकर जैसे भी बने जीते मरते दौड़ लगानी चाहिए । बस यही है नशे के आधार पर फुर्ती मिलने का कारण । पर थके लोग ही नशा पीते हों ऐसी बात नहीं । उसे फैशन

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के लिए, बड़प्पन की शान के लिए भी पिया जाता है ।

लोग सिगरेट को मुंह से लगाए ही रहते हैं । एक ठंडी नहीं हो पाती कि दूसरी सुलगा ली जाती है । आरंभ में फिजूलखर्ची को बड़प्पन की निशानी समझकर ठाठ बाट प्रदर्शन के लिए उसे पिया जाता है । पीछे वह एक लत बन जाती है । छोड़ते बनती नहीं । बहुत सी कुटेबें ऐसी हैं जो आरंभ में शेखी खोरी की दृष्टि से अपनाई जाती हैं किंतु बाद में वे ऐसी मुंह लगती हैं कि छुड़ाए नहीं छूटतीं । सिगरेट का भी वही हाल है । अब सस्ते दाम की बीड़ी पीने में बेइज्जती समझी जाती है । सिगरेटों में भी जितने ऊंचे दाम की खरीदी जाए उतनी ही शान बनती है । लत वालों के लिए पांच–दस रुपए रोज की

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिगरेट पी जाना मामूली बात है । पहले गुरुजनों के सामने मुंह छिपाकर पीते थे । माता पिता के समाने पीना उनकी बेइज्जती मानी जाती थी पर अब ऐसी बात नहीं रही ।

भांग, अफीम, गांजा, सुलफा नशे कहे जाते हैं । शान में सीधी छलांग सिगरेट के बाद शराब पर लगाई है । यार दोस्तों का सम्मान शराब से होता है । जो नहीं पीते वे छोटे आदमी माने जाते और अपराधी समझे जाते हैं । रिश्वत के रूप में शराब पेश की जाती है । नकंद पैसा देने में हिचक भी होती है पर शराब पेश करने में वैसी कोई बात नहीं । यह इज्जत बढ़ाने वाली रिश्वत तो सरकारी अफसरों के बीच खुलेआम चलती है । साथ में खुद को भी पीना पड़ता है । घर दफ्तर में इसे पेश करने में कुछ हिचक

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगती हो तो होटल में इशारा करते ही काम चल जाता है । इसके लिए आग्रह भी नहीं करना पड़ता । फिर अकेली शराब भी नहीं पी जाती, मांस से बनी दूसरी चीजें भी होती हैं ।

शराब और भी जल्दी पियक्कड़ को अपना आश्रित बना लेती है । आरंभ में शौक मौज की दृष्टि से यदा कदा पी जाती है । दोस्ती में, दावत में पीछे वह इस तरह गरदन पकड़ती है कि छुड़ाए नहीं छूटती । बार बार उसे पीने को मन चलता रहता है । न पीने पर मन में व्याकुलता होती है । कुछ कदम और आगे बढ़ने पर स्थिति ऐसी हो जाती है कि शराब पिए बिना शरीर काम ही नहीं करता । ऐसा लगता है कि लंघन में से उठे हैं या बुखार से उठकर लड़खड़ाते हुए खड़े हो रहे हैं ।

सिगरेट या शराब के नशों से हानि लाभ

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न समझते हों सो बात नहीं है । आए दिन पत्र पत्रिकाओं में ऐसे लेख छपते रहते हैं जिनमें इनकी हानि पर प्रकाश डाला जाता रहता है । सिगरेट का कैंसर से सीधा संबंध है । वह श्वांस नलिका को, फेफड़े को, आमाशय को मस्तिष्क को सीधी हानि पहुंचाती है और इन अवयवों से संबंधित अनेकों बीमारियां समाने ला खड़ी करती हैं । अलग पैसा तो खर्च होता ही है ।

शराब एक प्रकार का जहर है । वह पाचनतंत्र को बुरी तरह जला देता है । जिगर गुर्दे, आंतें, आमाशय सभी बुरी तरह प्रभावित होती हैं, वे अपना काम ठीक तरह कर सकने योग्य नहीं रहते हैं । आरंभिक दिनों में वह नुकसान प्रत्यक्ष दिखाई नहीं पड़ता पर कुछ ही दिनों में इन अवयवों से संबंधित बीमारियां

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रत्यक्ष प्रकट होने लगती हैं । शराब पीने पर व्यक्ति अच्छे आदमी की तरह काम करने योग्य नहीं रहता ।

सबसे अधिक प्रभाव दिमाग पर पड़ता है । पीते ही नशा आता है और आदमी पागल जैसा हो जाता है । नशा उतरने पर भी मस्तिष्क की कुशाग्रता चली जाती है । हर समय क्रोध और आवेश छाया रहता है । बुद्धि सही निर्णय नहीं कर पाती । अर्ध पागल जैसी स्थिति बनी रहती है । अधिक पी जाने पर तो और भी बुरा हाल हो जाता है । घर में मारपीट, गाली गलौज का दुर्व्यवहार होता रहता है । पैसे के प्रश्न को लेकर पत्नी, भाई, माता, पिता आदि से कलह होती है । अपनी कमाई कम पड़ती है । इसलिए दूसरों से अनुचित काम के लिए छीन झपट करने पर

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कलह होना ही चाहिए । ऐसी दशा में जहां दरिद्रता छाई रहती है वहां कलह भी कम नहीं होती ।

शराबी अप्रमाणिक माना जाता है । उसकी इज्जत नहीं रहती, कोई भरोसा नहीं करता । मूर्ख और निर्लज्ज समझा जाता है । इन परिस्थितियों में हर आदमी उससे बचने की कोशिश करता है । किसी प्रकार की सहायता करना तो दूर, अप्रामाणिक व्यक्ति अपराधियों की गणना में गिना जाता है । चोर उचक्के चाहे अपने यहां सीधा आक्रमण न करें तो भी हर आदमी उनसे घृणा करता है और चौकस रहता है ।

शराबी के घर में सदा तंगी छाई रहेगी । ऐसी दशा में जरूरी कामों के लिए भी वह पैसा जुटा नहीं पाता । हारी बीमारी, बच्चों की

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षा, सामाजिक मान मर्यादा जैसे कार्यों में उसे पग पग पर अपमानित होना पड़ता है । अभावग्रस्त स्थिति हर समय उसे नीचा दिखाती है ।

शराबी की औलाद भी बाप के दुर्गुण सहज ही सीख जाती है । वंश परंपरा साथ चलती है । गरीबी, घर के वातावरण की विपन्नता, घृणा, मारपीट जैसे कारणों से संतान पर हर घड़ी आक्रोश छाया रहता है । उनमें भी कई प्रकार के दीर्घ दुर्गुण आरंभ से ही पलने और बढ़ने लगते हैं । बच्चे आज्ञाकारी हो जाते हैं और थोड़े समर्थ होते ही बाप से बदला चुकाने के लिए तनकर खड़े हो जाते हैं और मारपीट तक करने से नहीं चूकते । शिक्षा और संस्कृति के अभाव में बच्चे अपने निज के जीवन में भी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी दिशा में उन्नति करने योग्य नहीं रह जाते, आवारागर्दी में घूमते हैं । फलतः बाप की तरह बेटे भी समाज में पग पग पर अपमानित होते हैं । उनके विवाह शादी का प्रश्न आता है तो भी लोग विचर जाते हैं । लड़के लड़की दोनों को ही कुसंस्कारी मान लेते हैं और उनके साथ संबंध जोड़ने में हिचकिचाते हैं ।

जिस प्रकार दाद, खाज, तपैदिक आदि शारीरिक क्षेत्र में छूत के रोग माने जाते हैं उसी प्रकार शराबी भी एक प्रकार का नैतिक रोगी है उससे लोग स्वयं बचते हैं और अपनों को बचाने की कोशिश करते हैं । उन्हें भय रहता है कि ऐसे व्यक्ति के पास बैठने से वे दुर्गुण अपने को भी लग सकते हैं और सर्वनाश कर सकते हैं ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नशेबाजी की आत्मघाती लत :

चाय–कॉफी तो अब दैनिक मजेदारी की चीज हो गई है । बीड़ी सिगरेट बड़प्पन की निशानी है । पीने वाले कहते हैं, इससे फुर्ती आती है और काम अधिक होता है । दूसरे लोगों पर मालदार और खर्चीले, बड़े आदमी होने की छाप पड़ती है । पैसे की बात ध्यान में आती है तो अकेले दुकेले होने पर राह चलते बीड़ी से भी काम चला लेते हैं, पर जब यार दोस्तों का साथ हो तो फिर सिगरेट के बिना काम नहीं चलता । इनमें भी अधिक मंहगाई वाली के इस्तेमाल करने से शान बनती है । इससे आगे का सबसे ऊंचा दर्जा शराब का है । उसे हर वक्त सिगरेट की तरह नहीं पिया जाता, जरूरत पर पार्टी जैसा माहौल बना होता है या बनाया जाता है, तब तो शराब ही

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए । अभ्यासी नशेबाज तो रात को अकेले में पीते हैं, किंतु जिन्हें शान जतानी है, वे खुद पीते हैं और दूसरों को पिलाते हैं, यह फैशन बन गया है । अभ्यासियों को तो नींद आ जाती है पर खुराफाती दंगा मचाते, जो चाहे सो बकते, मारपीट करते देखे गए हैं । गहरा नशा चढ़ गया तो घर और गली कूचों में अंतर दिखाई नहीं पड़ता । ढूंढ़-खोज होती है तो घर वाले जहां तहां से पकड़कर ले जाते हैं । सस्ती में नशा ज्यादा होता है और मौत का दिन भी जल्दी नजदीक आता है । मंहगी में पैसा अधिक लगता है, सो मरने से पहले घर को इस तरह खोखला बना देती है कि काठी कफन के लिए भी पड़ौसियों से मांगना पड़ता है । घर के जेवर आदि तो पहले ही बिक चुके होते हैं ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूछने पर नशेबाज कहते हैं कि पीने में बड़ा मजा आता है । इस मजे की परिभाषा भी वे स्वयं ही कर सकते हैं । जायके में सभी कड़ुवे होते हैं । अफीम, शराब, सभी कड़वे । गांजा, चरस, हैरोइन, स्मैक पीते ही सिर घूमता है और लगता है कि यहां गिरे वहां उड़े । फिर पीने वाले यही कहते हैं कि बड़ा मजा आया । यह शौक संगति से लगता और लगाता है । जो स्वागत सत्कार में पीने का आग्रह करते हैं । कहना न मानने पर नाराज होने की धमकी देते हैं । कुछ ही दिन यह हां ना चलती है । आदत पड़ जाने पर तो खुद ही बेचैनी उठती है और जरूरी काम छोड़कर भी लगी लगन को शांत करने की ठेलाठेली मचती है ।

नशों का क्या प्रभाव होता है ? यह किसी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से छिपा नहीं है । करने वालों से भी नहीं, क्योंकि वे बिरादरी वालों की दुर्गति अपनी आंखों से देख चुके होते हैं । उन्हें किसी ने समझाया न हो सो बात भी नहीं । हितू संबंधी दबी जबान बता चुके होते हैं । कहना न मानने का नतीजा क्या होगा, यह समझाने में भी वे चूके न होंगे । उनके सामने कहना मानने, वैसा ही करने का वचन भी देते हैं । पर आदत तो आदत, छूटने का नाम नहीं लेती ।

नशा पीते समय में फुर्ती और मस्ती भी लाते दिखाई पड़ते हैं, पर धीमी आत्महत्या की तरह शरीर के महत्वपूर्ण अवयवों को नष्ट करने में क्रमबद्ध रूप में जुटे रहते हैं । पाचन तंत्र, फेफड़े, हृदय, मस्तिष्क, जिगर, गुर्दे, आंतें यही शरीर के प्रमुख अंग हैं । नशा एक

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी ऐसा नहीं होता जो इनमें से किसी न किसी को अथवा कइयों को नष्ट भ्रष्ट न करे । आरंभ में पता नहीं चलता, जब अवयवों की खराबी कष्ट देती है तभी नया नशा पीकर गम गलत कर लिया जाता है । पर वह धीमी आग सुलगती ही रहती है और शरीर को विषैला करके इस स्थिति में कई प्रकार की बीमारियां प्रत्यक्ष प्रकट होने लगतीं और इलाज करने पर भी किसी तरह काबू में नहीं आती हैं ।

नशों का तत्काल एवं सबसे अधिक प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है । मजा, मस्ती, फुर्ती आदि जो कुछ दीखता है उसका केन्द्र मस्तिष्क है । यह सबसे अधिक संवेदनशील तंत्र है । इसी पर नशे का दुष्प्रभाव सबसे अधिक छाया रहता है । फलतः कल्पना शक्ति, स्मरण शक्ति, विवेक शक्ति आदि जो कुछ मानसिक विशेषताएं

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं, वे पहले झीनी पड़ती हैं, अंततः उल्टी हो जाती हैं जिससे सामने प्रस्तुत समस्याओं में से किसी का भी समाधान उसके लिए संभव नही रहता । वह उल्टा सोचता और उल्टा करता है, फलतः उलझनों में निरंतर फंसता जाता है । इससे दूसरों के सामने वह मूर्ख, नासमझ, बुद्धू, जिद्दी आदि विशेषताओं वाला गया बीता आदमी बनता जाता है ।

नशे सस्ते नहीं हैं । उनकी कीमतें बढ़ी चढ़ी होती हैं । आज जब कि कोरा खर्च जुटाना मंहगाई के कारण बोझिल बन गया है तब नशेबाजी का निरंतर बढ़ता खर्च कहां से जुटे । स्पष्ट है कि उसके लिए उसे बेईमानी–बदमाशी करनी पड़ेगी अथवा जमा पूंजी का सफाया होता जाएगा और कर्ज लेकर काम चलाने की स्थिति आ जाएगी । ऐसे आदमी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिया हुआ कर्ज वापस तो कभी कर ही नहीं सकते । अन्य बदमाशियाँ भी खुलती जाती हैं । अतएव नशेबाज पूरी तरह अप्रामाणिक बन जाता है । कोई उसकी बात का भरोसा नहीं करता । अपने परिवार से घनिष्ठता नहीं बनने देता, सहायता का अवसर आने पर स्पष्ट शब्दों में अथवा जिस तिस बहाने इंकार ही कर देता है । एक बार सहायता कर देने पर बार बार वह पीछे लगा रहता है इसलिए समझदार सहायता के नाम पर पहली बार में ही स्पष्ट इंकार कर देते हैं और अन्य परिचितों को भी सावधान कर देते हैं ।

नशेबाजों की संतानें हर दृष्टि से बर्बाद हो जाती हैं । यदि आदत पड़ने के बाद संतान जन्मी है तो जन्म के साथ ही वह दुर्बुद्धि वंश परंपरा के रूप में साथ आती है । यदि बाद

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की बात है तो भी बच्चे आए दिन जो दुर्मति दुर्गति देखते हैं उसका कुप्रभाव धीरे धीरे एकत्रित करते जाते हैं । ऐसे पिताओं के प्रति किसी प्रकार का मान सम्मान तो रहता ही नहीं । पति पत्नी में आए दिन कलह होते हैं । इसे बच्चे देखते हैं और मन में घृणा तिरस्कार एकत्रित करते हैं । कुछ समर्थ होने पर सीधा सामना करते हैं और बदला चुकाते हुए उसकी भरपाई कर लेते हैं जो उनने पत्नी तथा बच्चों की जिंदगी बरबाद करते हुए किया था । घर में घुसते ही जिसे कंगाली, दुर्गति, तिरस्कार और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़े, उसे जीवित रहते हुए भी नरक भुगतने वाला कहा जाए तो इसमें कुछ अत्युक्ति नहीं है । नशेबाज न केवल अपना वरन् संतान का भी विश्वास और सम्मान गंवा बैठता है ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिसने स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, सम्मान, पैसा सब कुछ गंवा दिया, उसके पास बचा क्या ? जिसके प्रति बच्चों के संबंधी कुटुम्बियों के मन में गहरा तिरस्कार भरा है उसकी इज्जत और सहायता कौन करेगा ? आड़े समय में कोई उसके काम क्यों आएगा ? ऐसे लोगों की संतानें किसी सम्मानास्पद स्थिति तक नहीं पहुंच सकतीं ।

सभी डरते रहते हैं कि इनका बाप जब ऐसा था तो यही क्यों कर भला आदमी हो सकता है और किसी सौंपी हुई जिम्मेदारी को वह कैसे ईमानदारी के साथ निभा सकता है ? उसके चरित्र में प्रामाणिकता का समावेश कैसे हो सकता है ?

नशेबाज समय से पहले मरते हैं । बीमारियां उन्हें पहले ही आ घेरती हैं और अंत

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में अकाल मृत्यु के मुंह में असमय ही जाने के लिए विवश होना पड़ता है । इतनी हानियां समझने पर भी यदि कोई आत्मघात पर उतारू हो तो इसे विडंबना ही कहा जा सकता है ।

नशेबाजी भौंड़ी आत्महत्या :

भगवान बुद्ध ने एक बार कहा था– "मनुष्यो ! तुम सिंह के समाने जाते समय भयभीत न होना, वह पराक्रम की परीक्षा है । तुम तलवार के नीचे सिर झुकाने में न डरना, वह बलिदान की कसौटी है । तुम पर्वत शिखर से पाताल में कूद पड़ना, वह तप की साधना है । तुम बढ़ती हुई ज्वालाओं से विचलित न होना, वह स्वर्ग परीक्षा है । किंतु शराब से सदा भयभीत रहना, क्योंकि वह पाप और अनाचार की जननी है ।"

नशे समस्त बुराइयों की जड़ हैं । संसार

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में हुई हिंसात्मक घटनाओं एवं नैतिक अपराधों का सर्वेक्षण किया तथा उन अपराधियों का निरीक्षण किया जाए तो उनके कारणों से स्पष्ट होगा कि अधिकांश अपराधियों में नशेबाजी की विशेषतया मद्यपान की प्रवृत्ति रही है । जिन राष्ट्रों में मद्यपान की प्रवृत्ति अधिक है वहां अपराध भी उतने ही अधिक होते हैं । अमेरिका, इंग्लैण्ड संपन्न राष्ट्र हैं किंतु शराब की खपत इन राष्ट्रों में सर्वाधिक है । अपराध की घटनाएं भी वहां सबसे अधिक होती हैं । शारीरिक एवं मानसिक रोगों की बहुलता यहां देखी जाती है । पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन वहां इतना अशांत विग्रहों से भरा हुआ है जितना संसार भर में कहीं नहीं है । ऐक सर्वेक्षण के अनुसार अमेरिका में मद्यपान करने वालों की संख्या ९० प्रतिशत है जिसमें

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युवकों की संख्या सबसे अधिक है । किशोर होते होते बच्चे पीना आरंभ कर देते हैं । इंग्लैण्ड की भी लगभग यही स्थिति है । भौतिक दृष्टि से जो राष्ट्र जितना संपन्न है, वहां के मनुष्यों में मद्यपान की प्रवृत्ति उतनी ही अधिक है ।

मद्यपान की अनेकों हानियां हैं । शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक हानियों का लेखा जोखा लिया जाए तो मालूम होगा कि इस दुष्प्रवृत्ति के कारण असाधारण क्षति हुई । यह अपूर्तिनीय है । मानव जीवन की सबसे बड़ी संपदा है विवेक, सबसे बड़ी क्षति यही है कि विवेक कुंठित हो जाए । विवेकरहित जीवन पशुतुल्य है । नीति अनीति, भला बुरा, पाप पुण्य का निर्धारण कर सकना विवेक के अभाव में संभव नहीं है । विवेक का अंकुश हट

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाने से पाशविक प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलता तथा मनुष्य पतन के गर्त में गिरता जाता है । विवेक को मानवी जीवन से अलग कर दिया जाए तो बचता ही क्या है ? पशु तुल्य जीवन । जिसका एकमात्र लक्ष्य होता है–पेट और प्रजनन । इन दो उदाहरणों की पूर्ति जैसे भी बन पड़े वह करने का भले बुरे प्रयास करता है । वह अनीति का मार्ग अपनाने तथा हिंसात्मक कार्य करने में भी नहीं चूकता है । भगवान बुद्ध ने शराब को इसी कारण समस्त पापों की जननी कहा था । इसके ही गर्भ में अन्यान्य बुराइयां पैदा होतीं तथा पोषण पाती हैं और पुष्ट होकर व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन की जड़ काटती रहती हैं ।

मद्यपान से सामाजिक एवं पारिवारिक

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन पर प्रभाव पड़ता है । दुष्प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलता है साथ ही शराबी को व्यक्तिगत क्षति भी कम नहीं उठानी पड़ती है । शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक क्षति का उल्लेख यहां न भी किया जाए तो भी अपने प्रति जन विश्वास का समाप्त हो जाना एक इतनी बड़ी क्षति है जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती । प्रतिभावान एवं शक्ति संपन्न होते हुए भी उसका चरित्र संदिग्ध बना रहता है । कोई भी नेक व्यक्ति उस पर विश्वास नहीं करता । चरित्र की संदिग्धता मनुष्य की सबसे बड़ी पराजय है । खोजा जाए तो प्रतिभा की, संपन्नता की दृष्टि से अनेकों शराबी मिल जाएंगे, जिनकी विशिष्टता को देखकर सभी आश्चर्यचकित रह जाएंगे । किंतु उनकी उस दुष्प्रवृत्ति के कारण लोगों के मन में सदा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनके प्रति अविश्वास और तिरस्कार ही बना रहता है ।

पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन पर मद्यपान का घातक प्रभाव पड़ता है । परिवार की आर्थिक व्यवस्था लड़खड़ा जाती है । एक शराबी बच्चों के प्रति अपने दायित्वों को पूरा नहीं कर पाता । फलस्वरूप वह संतान के भविष्य के साथ खिलवाड़ करता है । समुचित देखरेख, प्यार, दुलार के अभाव में बच्चे कुसंस्कारी एवं उच्छृंखल बनते हैं । आगे चलकर यही बच्चे अपराधी बन जाते हैं । परोक्ष रूप से बच्चों के भविष्य को अंधकारपूर्ण बनाने का कारण वह शराबी पिता ही होते हैं । यह एक बहुत बड़ा नैतिक एवं सामाजिक अपराध है ।

नशेबाजी में एक ही गुण बताया जाता

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है–उत्तेजना या स्फूर्ति । किंतु नशे पीकर उत्पन्न की गई उत्तेजना तो एक प्रकार की मनोव्याधि है जो मानसिक संतुलन नष्ट कर देती है । असंतुलित मन शरीर पर भी नियंत्रण नहीं रह पाता । मानसिक रूप से उत्तेजित असंतुलित व्यक्ति युद्ध में कौशल दिखा पाना तो दूर रहा, स्वयं पर नियंत्रण रख पाने में भी असमर्थ होता है । मदहोशी का नाम यदि साहस है तो इतिहास के परदे पर साहसियों की श्रेणी में शराबियों का नाम सबसे आगे होता । युद्धों के इतिहास बताते हैं कि यदि मद्यपान न किया गया होता तो युद्धों के परिणाम कुछ और ही होते । पराजय का कारण शराब बनी ।

प्रथम विश्वयुद्ध की घटना है । जर्मन सेनाएं फ्रांस में तेजी से घुसती जा रही थीं ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पेरिस के निकट के गांवों में जर्मन सैनिकों का अधिकार हो चुका था । कुछ घण्टों में पेरिस नगर भी जर्मन सेना के अधिकार में आने वाला था । स्थिति की प्रतिकूलता को देखकर फ्रांसीसी सेना में भगदड़ मच गई । सेना के कमांडर ने पेरिस नगर छोड़ देने की बात कहते हुए सेना के कर्मचारियों को आदेश दिया कि शराब के जितने भी गोदाम हैं उन्हें खुला छोड़ दिया जाए । इसके पीछे उसकी बुद्धिमत्ता छिपी थी । जर्मन सैनिकों ने पेरिस नगर में प्रवेश किया । गोदामों में भरी शराब को देखकर सेवन करने का लोभ नहीं रोक सके । सबने भरपूर शराब पी । परिणाम यह हुआ कि सैनिकों की शारीरिक एवं मानसिक स्थिति ऐसी नहीं रही कि वे युद्ध कर सकें । तीन डिवीजन जर्मन सैनिकों को गोलियों का

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लक्ष्य बनना पड़ा । फील्ड मार्शन 'क्राउन प्रिंस' ने जर्मनी की उस हार का कारण सैनिकों द्वारा अधिक मद्यपान को बताया ।

नैपोलियन के विषय में कहा जाता है कि जिस समय वह वाटर लू के मैदान में दुश्मनों से घिरा था उस समय उसका सेनापति शराब के नशे में धुत पड़ा था । नैपोलियन की सहायता के लिए वह नहीं पहुंच सका । जिसके फलस्वरूप वह पकड़ा गया । उसकी पराजय का कारण शराब बनी । द्वितीय महायुद्ध में फ्रांसीसी फील्ड मार्शल 'पेतें' ने अपनी सेना की हार का कारण बताते हुए एक प्रसारण में कहा कि "हमारी हार का कारण सैनिकों का अधिक मद्यपान करना है ।"

मद्यपान से शारीरिक एवं आर्थिक क्षति

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो होती ही है मानसिक संतुलन और आत्म संयम भी समाप्त हो जाता है । संयम के अभाव में मन की लगाम ढीली पड़ जाती है । वह दुष्प्रवृत्तियों की ओर बढ़ता जाता है । प्रत्येक दृष्टि से सैनिकों का मद्यपान करना हानिकारक ही है । देश की सुरक्षा जैसा महत्वपूर्ण दायित्व सैनिकों के ऊपर होता है । यह वहन कर सकना तभी संभव है जब उन्हें उस दुष्प्रवृत्ति की बुराइयों से अवगत कराया जाए तथा शांति का निवारण किया जाए जिसमें उन्हें सशक्त एवं साहसी होने की आशा दिखाई जाती है ।

विश्व के सभी मूर्धन्य विचारकों, मनीषियों एवं आप्त वचनों ने मद्यपान को समस्त बुराइयों की जड़ माना है । महात्मा गांधी ने कहा था ''यदि मुझे एक घण्टे के लिए संपूर्ण भारत का

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिनायक बना दिया जाए तो सर्वप्रथम शराब की जितनी दुकानें हैं उन्हें बिना कोई मुआवजा दिए बंद करा दूं ।'' 'बाइबिल'' कहती है ''तू यह जान ले कि मद्यपान नहीं करेगा तो इस प्रकार परम पिता परमात्मा के गुणों को अपने में अवतरित करेगा । हजरत मुहम्मद का अभिवचन है--

''अल्लाह ने लानत फरमायी है शराब पर । पीने और पिलाने वाले पर, बेचने और खरीदने वाले पर और किसी भी प्रकार के सहयोग देने वाले पर ।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ.प्र.)

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org